४४८९

श्री

श्रीवल्लभाचार्यजी कृत

अंतःकरण प्रबोध ग्रंथ.

तेनी

श्रीहरिरायजी विरचित

संस्कृत टीकानुं

गुजराती भाषांतर.

रचनार

गोस्वामि श्री विठ्ठलरायजी महाराज.

आपनी आज्ञा लईने

वैष्णव ठा० दयाळ मूळजीयें

मूळ ग्रंथ सहित

श्रीमुंबापुरीमध्ये

बॉम्बे सिटि प्रेसमां छपावी प्रसिद्ध कर्युं.

संवत् १९४६.

सन १८९०.

नुछावर रु० ॥)

कठिण शब्दोनो कोश.

उल्लंघन	एटले	न गणी.
प्रौढ	,,	मोहोटुं.
तात्पर्य	,,	अभिप्राय.
भ्रांतपणुं	,,	भूलापणुं.
उत्कृष्ट	,,	श्रेष्ठ.
प्रतिकूल	,,	विरुद्ध.
अभिचार	,,	जादू.
मृदु	,,	कोमल.
मद	,,	अहंकार.
उपेक्षा	,,	त्याग.
अनुभाव	,,	प्रताप.
सत्तानथी	,,	छे नहीं.
प्रायश्चित्त	,,	पाप मटाडवानो उपाय.
सुरा	,,	मदिरा
वस्तुतः नथी	,,	छे नहीं.
कदाचित्	,,	कोई वखत.
आक्रांत	,,	वलगेलुं.

प्रस्तावना.

वेदादि शास्त्रना सारात्मक सिद्धांतरूप पुष्टिमार्गना प्रवर्त्त कर्त्ता श्रीमदाचार्यचरणोएं पोताना मार्गानुवर्त्ति वैष्णवोउपर कृपा करीने वेदशास्त्रनां प्रमाण वचनोसहित संस्कृत ग्रंथो कऱ्या छे. अने तेमनी टीका आचार्यवंशीय गोस्वामिवर्योयें संस्कृतमांज करी छे. पण हमणाना घणा खरा वैष्णवोने संस्कृतनुं ज्ञान न होवाथी संस्कृत ज्ञान विनाना एवा जिज्ञासु वैष्णवो पण पोताना मार्गमां शिथिल थईने आरूढ पतितपणाने पामता जोईने पृथ्वी दिग्विजय करनार गोस्वामि श्री पुरुषोत्तमजीयें शास्त्रप्रमाण वचनोसहित पूर्वोक्त ग्रंथोउपर टीकाओ करी छे. तेमध्येथी जेटली टीकाओ आप श्रीने मली छे ते उपरथी सांप्रत गोस्वामि श्री लालमणिजी सुत श्री विठ्ठलरायजी नित्य पोताना मंदिरमां कथा करे छे पण श्रोताजन संसारासक्त होवाथी ए भाषणनुं अक्षरशः अवधारण करी शकता नथी. एम जोई तेमनी उपर कृपा करीने ते कथा गुर्जरभाषामां लखी लेवाने वैष्णव दयाल मूलजीने. आप श्रीएं आज्ञा करी. ते आज्ञाने अनुसरीने ए कथा सर्वे वैष्णव दयाल मूलजीएं लखी लीधी, पण कथा श्रवण करवा आवनारा वैष्णवोएं आप श्रीने दैन्यपूर्वक विनति करी के, लखी लीधेली कथा सर्व छपावी बाहेर पडाय तो सारुं, के जेथी सर्वजिज्ञासु वैष्णवोने पोताना अवकाशना वखतमां जरावार पण वांचवाथी तेमने पोताना जन्म वृथा जावानु कांईक ज्ञान थाय. अने भगवत्कथामां तथा भगवत्सेवामां रुचि थाय. एवा

हेतुथी ए ग्रंथोनी टीका छपावी बाहेर पाडवाने आप श्री वि-
ठ्ठलरायजीने विनति करी, त्यारें आप श्रीयें विचार्युं के ग्रंथो
छपाववा ए केटलाएक बालकोने तथा अमोने पण रुचता न
थी. पण छपाव्याविना पुस्तकोना थोडापणाथी, भगवत्कृपा-
थी वैष्णवो थया, तोए पण ग्रंथो मल्याविना ग्रंथना अबोध-
थी आवा उत्कृष्ट मार्गमां पुरुषोत्तमना संबंधनुं तथा सेवा व
गैरेनुं सुख अनुभवमां आवतुं नथी. एवी महोटी खामी जो
ईने छपाववुं जोइएं. पण एकला जिज्ञासु वैष्णवोनेज आप-
वाथी छपाववा बाबतनो दोष पेदा थाय छे ते नहि थाय ?
एम विचारीने ए विनति अंगीकार करीने ए ग्रंथो छपाव्या
छे. तेथी प्रत्येक गाममां जेजे वैष्णवोने बीजाने पुस्तक आ
पवाने मोकल्यां होय तेमणे उपर लख्या प्रमाणेना जिज्ञासु
वैष्णवोनेज आपवा. केम के छपाववानो हेतु वधारे पुस्तको
खपाववा वगेरे मतलब उपर नथी.

सूचना.

अशरण शरण शरणागत वत्सल कृपासिंधु दीनबंधु गोस्वामि श्री विठ्ठलरायजीने दासानुदास ठक्कर दयाल मुलजीनी दैन्यपूर्वक विनति ए छे जे आप श्रीयें जे टीका लखी लेवानी मने गुलामने आज्ञा कीधी अने ते शोधावीने पाछी लखावी, पण ते लखवामां मारी अल्पबुद्धि तथा मंदबुद्धिवालानी चूक घणी थई हशे, ते आप श्री कृपा करीने क्षमा करशो. एज महारी विनंति छे.

सर्व ग्रंथ वांचनारा वैष्णवोने हुं ठक्कर दयाल मुलजी नम्रतापूर्वक विनति करुं छुं के कथा लखती वखतें महारी अल्प तथा मंदबुद्धिवालानी जे जे चूक थई होय ते सर्व वैष्णवोएं महारी उपर-कृपा करीने क्षमा करवी.

आ ग्रंथमां जे जे ठेकाणे कठिण शब्दो देखवामां आव्या छे, तेनो अर्थ एज ग्रंथना आरंभना (२) जा पेजमां प्रथम एक कोष्टकमां ते कठण श

द् लखीने पछी बीजा कोष्टकमां तेनो अर्थ कर्यो छे त्यांथी जोई लेवो.

आ प्रस्तावना शोले ग्रंथो बाबतनी छे. तेथी ज्यारें बधाय ग्रंथ छपाईने भेला थाय, त्यारें तेमां प्रथम ग्रंथ जे यमुनाष्टक तेनी टीकाथी पहेला पानामां ग्रंथ बधासाथें जोडती वखते नाखवा. अथवा जेने ए ग्रंथो छूटाज राखवा होय तेणे बध्धा ग्रंथोनी आ एकज प्रस्तावना समजवी.

श्री

श्रीकृष्णायनमः

श्रीमदाचार्य श्रीविठ्ठलेश्वरचरणकमलेभ्योनमः

श्रीगुरुचरणकमलेभ्योनमः

अथ

श्रीआचार्यजीकृत अंतःकरणप्रबोध ग्रंथ तथा तेनी श्रीहरिरायजीकृत टीका तेनुं गुजराती भाषांतर श्रीविठ्ठलरायजीकृत.

हवे श्रीकृष्ण अति दयालु अने निःसाधन जे साधन विनाना जीव जेवा नीचेना श्लोकमां कह्या छे (श्रीमद्भागवतद्वितीयस्कंध.) श्लोकः ॥ **अह्या पृतं निशि शयानमतिश्रमेण लोके विकुंठ उपनेष्यति गोकुलंस्म** ॥ अर्थः- गोकुलना बधा रेहेनारा छे ते दिवसमां तो काममां लागि रह्या छे तेथी घणो थाक लागीने रात्रे सुई रह्या छे तेमने प्रसिद्ध रीते वैकुंठलोकमां लई जशे. ए श्लोकमां बतावेला (श्रीगोकुलवासी) निःसाधन जीवजेवा निःसाधनजीवनो उद्धार करवासारु पुष्टिमार्ग प्रकट

करवानी इच्छावाळा प्रभु जेमणे पोताना मुखा-
रविंद रूप श्रीवल्लभाचार्यजीने प्रकट कर्या त्यारें
श्रीआचार्यजीये जीवोना उद्धारने अर्थे आनंदथी
श्रीभागवतनी उपर टीका श्रीसुबोधिनीजी प्रक
ट कर्यां तेमज स्वतंत्र भजनना प्रकारनो उपदेश
कर्यो ते श्रीठाकोरजीये एम मान्युं जे श्रीआचा
र्यजीए अमारो मर्म खोली नाख्यो. बध्धाना ई-
श्वर जे भगवान तेमनाथी श्रीआचार्यजीनो विप्र
योग न सेहेवायो तेथी देह अने देशना परित्या-
गनी आज्ञा करी ते श्रीआचार्यजीए जीवोनी उपर
दया अने पोतानी महोटाइथी पण बे आज्ञानुं
उलुंघन कर्युं तेथी श्रीआचार्यजीने पश्चात्ताप
थयो. हरि जे दुःखहर्ता भगवान् तेमनो दोष श्री
आचार्यजीने देखायो अने भगवानने मलवामां
विलंब थातां देखाणो अने भगवाननो भय ला
ग्यो जे भगवान छोडी देशे तो अने अंगीकार-
नी रीतथी अने धर्मना त्याग कर्याथी पण सहि
न शकाय एवो पश्चात्ताप थयो. हवे भगवानना

दोषनी स्फूर्ति केम थई ते कहे छे जे प्रथम बालक
नीजेम आज्ञा करी जे श्रीभागवतनो गूढ अर्थ
प्रकट करो अने हवे मने नाकहे छे तेथी भगवा
नना वचनमां स्थिरता नथी एवो दोष तेवरवत
हरीमां स्फुर्यो पछी जे वचन आपना मनमां आ
व्यां तेथी अंतःकरणनुं समाधान करे छे.

॥ मूळश्लोक ॥

अंतःकरण मद्वाक्यं, सावधा
नतया शृणु ॥ कृष्णात्परं ना
स्ति दैवं, वस्तुतो दोषवर्जितं ॥१

अर्थः- हे अंतःकरण! महारुं वाक्य सावधानप-
णाथी सांभल. कृष्णाथी पर बीजुं दैव वस्तु एक
रीने दोषविनानु नथी. टीका करे छे जे हे अंतः
करण सावधान थईने एक तुं मारूं वचन सां-
भल. अंतःकरण पदथी एने बाहेरनुं ज्ञान नथी
एम जणाव्युं अंतःकरणमां पण भगवाननो दो
ष देखाणो तेथी श्रीआचार्यजी पोताथी अंतःक
रण जुदूं माने छे ते कहे छे. भगवानमां दोष दे-

खाणो तेथी आज्ञानुं उल्लंघन कर्युं तेथी अंतःक
रणने पोतानुं करवासारू समाधान करे छे नही
तो बीजी रीतथी पोतानी महोटाईनी दृढता राखे
तो बध्धा प्रकारनो भाव जातो रहे म्हारा वाक्य
नुं श्रवण कर एम कह्याथी पोतानो संबंध वाक्य
मां जणाव्यो. शाथी जे ए भगवद्भावने
निर्दोष बोधकरावबावालु छे तेथी वचनने आप
महारुं कहे छे तेथी मन अने वाक्य ए पदनो स-
मासनो बोध करावे छे एकवचन छे तेथी बध्धा
वचनोथी एकज अर्थनो बोध थाय छे फरी श्री-
आचार्यजी पुरुषोत्तम छे मुखरूप छे अने भावमां
जेमनुंचित्त प्रौढ थइ रह्युं छे तेथी तेमनुं वाक्य छे ते
दुःखथी पण समज पडे तेवुं नथी तेथी अर्थ ज-
णातो नथी तेथी अंतःकरणने कहे छे जे सावधा
न थइने तूं श्रवण कर. हवे श्रवण कर एम कह्या-
थी तात्पर्यसहित अर्थ जाण एम बताव्युं छे अ-
ने श्रवणथीज पोताना बीजा विचार दूर कर एवो
अभिप्राय छे एजो श्रवण न करे तो दोष पण था

ए तेथी श्रवण कर एवो विधि देखाड्यो छे एटले आ ज्ञा करी छे. पश्चात्ताप बे तरेहथी थयो एक तो प्र भुनो दोष मनमां आव्यो अने पोताना दोषथी आ ज्ञारूपी स्वधर्मनो त्याग कर्यो तेथी बीजो. तेमांथी पेहेलो तो प्रभुमां दोष नथी ते केहे छे अने दो षनो प्रभुमां आरोप कर्यो तेथी चित्तने विषे भ्रांत पणुं पण कहे छे जे सदानंद कृष्ण छे तेमां दोषनी शंका पण पेदा थती नथी. एमां सदानंद ए बे पद- मां सत् शब्दे करीने जे कारणथी कृष्णमां निर्दोष पणु पण केहेवाए छे. आखु जगत् कृष्णरूप छे ते थी कृष्णथी बीजु कांई पण पर नथी तेथी विषम- पणुं एटले ओछा वधतापणु अने निर्दयपणु एरू पी जे बे दोष ते जगतना सर्वे कार्य करनारा भगवा न् तेमनामां नथी. हवे कृष्णथी पर नथी एम क ह्याथी कृष्णथी परनी सत्ता नथी एम जणावाए छे अने दैव एवा शब्दे करीने बध्धा यने पूजवा लाये कपणुं हरिमां बताव्युं तेमनेज परपणु कह्युं तेथी सर्वथकी उत्कृष्टपणुं बताव्युं. जगतने पूजवाला-

यक जे भगवान तेमने विषे दोषनी सत्ता केम होय बीजा देवोने पण एमनी विभूतिपणाए करीने पूज्यपणु छे अने हरि ए पोतानुं निर्दोषपणु भृगुऋषीने बतावेलु छे अने ते हरिनुं निर्दोषपणु अने पूर्णगुणपणु सर्व शास्त्रोमां निरूपण करेलुं छे अने दैव एवा नामे करीने बध्धाना भाग्यरूपपणु पण बतावेलु छे. जेम भाग्यविना बध्धा साधन विफल मान्या छे तेम भगवानना प्रतिकूल पणामां देवनुं फलदातापणुं ते विफल छे तेथी अमारा श्री आचार्यजीए सेवाफल नामना ग्रंथने विषे ते वरवते बीजा देवनी सेवा पण व्यर्थ छे एम निरूपण करेलुं छे

॥श्लोक॥ **प्रायश्चित्तानि चीर्णानि नारायण पराङ्मुखं ॥ ननिःपुनंति राजेंद्र स्कराकुंभमिवापगाः ॥** अर्थः- प्रायश्चित्त कर्‍यां होय ते नारायणथी जे बहिर्मुख होय तेने हे राजाना इन्द्र सदा पवित्र करता नथी जेम स्करानो घडो होय तेने नदी पवित्र करती नथी ए विगेरे वचनो छे पण पोताना संबंधे करीने बध्धाएने फल आप

नारा अने दोषने मटाडनारा अने पोता स्वरूपथी पण निर्दोष एवा कृष्णाने विषे केम दोषनुं निरूपण कराय त्यांहां शंका करे छे के पृथ्वीमां अवतार भगवाने ज्यारे लीधा त्यारे दैत्योने मारवाथी अने अनेक स्त्रियोनुं ग्रहण करवाथी हरिने विषे क्रोधादिक दोष देखाय छे. ॥ श्लोक ॥ येये हताचक्रधरेण राजन् त्रैलोक्यनाथेन जनार्दनेन ॥ तेते सर्वे विष्णुपुरीं प्रयाताः क्रोधोपि देवस्य वरेण तुल्यः ॥ अर्थः- हे राजन् ! चक्र धारण करनारा अने त्रैलोक्यना नाथ अने जना जे अविद्या तेने दूर करनारा तेमणें जेजे मार्‍यां ते सर्व विष्णुपुरीने प्राप्त थया तेथी देवनो क्रोध छे तेपण वरदान जेवो छे एमजो केहे तो दोष जे छे ते देखवा मात्र छे वस्तुतः नथी केम के तेना तेना अधिकार प्रमाणे मुक्तिना आपवाथी अने पोतानो आनंद आपवाथी विचार करिए तो हरिमां जे क्रोधादिक छे ते सरवाले हितकारी छे ॥ जीवना लगाडेला दोषोज हरिने स्पर्श न-

थी करता जेम वैष्णवोने अभिचारस्पर्श नथी करतो तेथी हरि जे छे ते दोषवर्जित छे एम ज्यारे छे त्यारे एवा जे नाथ छे तेमां दोषनुं आरोपण कर्‍याथी पेला जे उत्कृष्टता पेदा थई छे ते पण भगवानना करेला अपमानथी पोतानी मेले नाशने पामे अने स्वामिनो संबंध ज्यारे नथाय त्यारे महोटो अलाभ थाये एवी जो अंतःकरण शंका करे तो त्यां आगला श्लोकमां कहे छे.

॥ मूल श्लोक ॥

चांडालीचे द्राजपत्नी जाता रा
ज्ञाच मानिता ॥ कदाचि दपमा
नेवा मूलतः काक्षति र्भवेत् ॥२॥

अर्थः- चांडाली जे छे ते जो राजानी पत्नी थाय अने राजानी मानेती थाय कोई दिवस तेनु अपमान पण थाय तोयेपण मूलमांथी एटले राजपत्नीपणामांथी शुं ओछुं थाये. हवे टीकाकार लखे छे ॥ श्लोकार्ध ॥ संभावितस्यचाकीर्ति-र्मरणादतिरिच्यते ॥ अर्थः- जेने मान मलेलु

छे तेनी जे अपकीर्ति ते मरण करतां पण वधारे छे ए गीताना वचनथी पेहेलाथी जे उत्कृष्ट होय अने पछी तेनी हलकाई थाये तो महोटी हानि केहेवाय तेसारु पेहेला जीवना पोताना रूपमां दृष्टांत कह्यो छे ने तेवो हलको वर्णन करेलो छे अने तेने ज्यारे राजपत्नी जेवी महोटाई थई छे ने महोटाईनुं फल तो भगवानज मानेला छे केमजे पुष्टिमार्गना अंगीकारमां जीवनी महोटाई कांईपण काम नथी आवती· भक्तिहंस ग्रंथमां श्रीगुसाइजीए कह्युं छे॥ ॥श्लोक॥ ॥

पूर्वजीवगतोत्कर्षोप्यप्रयोजक इत्यपि

॥ ॥अर्थः- पेहेला जीवमां रहेली जे मोहोटाई छे ते पण कंई कामनी नथी तेथी अपमान जो थाए तो पण राजपत्नीपणुं जे मूल छे तेमांथी कांई ओछुं थतुं नथी अने अपमाननुं दुःख छे ते तो पोताना विचारथी तुं करे छे हे महारा मन तुं पोतानुं दासपणुं ईयाद कर दासने कांई अपमान नथी· राजपत्नी जो थाय

एमां जो थाय एम कह्युं छे तेथी अंगीकारमां दुर्लभता बतावी छे. जे राजपत्नीपणुं थयुं छे ते कोई रीते जतुं रहेतुं नथी. बीजा बहु बलवान लोको होय ते पण एने दुर्वचनोथी बोलावी शके नहि अने पछी बीजाओ एने भोगवी पण शके नही त्यारे थयुं केटलुं के अपमान थवाथी स्वामिना मलवा मां विलंब थयो ते तो विरहना अनुभव करावया सारु थयो छे अने भगवानने पोताना हृदयमां ज्यारे न जाणे त्यारे विरह थायज तेथी भगवानने दूर जाण्याथी जे अपमान छे ते दीन भावने उत्पन्न करनारुं छे. अने ते पछी राजपत्नीमां बीजा लोको सदा मातापणानी रीते चाले छे अने तेने महोटुं मान आपे छे तेथी एकांई अपमान केहेवाय नहीं. मूलमां कदाचित् एवुं पद कह्युं छे तेथी अपमानमां नित्यपणुं नथी. पोताना मनसहित अंगीकार कर्यो छे तेथी हरिना अंगीकारमां नित्यता छे. जेथी हरिनी इच्छा जीवमां अपमान करवानी नथी सीखववा सारु अथवा दंड करवा सारु करे छे क

ई पोतानी इच्छाथी करता नथी. अने पोतानी इच्छाथी करता होय तो अपमान नित्य थाय अथवा पोते चाहिने एम करे छे तेथी अंगीकारनी नित्यतातो होयेज. तेथीज करीने दंडने पण सर्वत्र अनुग्रहरूपज कह्यो छे. अपमानेपि एटले अपमान थाय तोपण एमां जे अपिशब्द एटले पण जे कह्युं छे एणे करीने अपमानने पण मान बरोबर गणयु छे. ए रीते वचनोये करीने अंतःकरणने बोध कराविने दृष्टांतथी पण बोध करावे छे जेथी करावेला बोधने दृढपणु सिद्ध थाय.

॥ मूल श्लोक ॥

समर्पणादहं पूर्व मुत्तमः किंस
दा स्थितः ॥ काम माधमता भा
व्या पश्चात्तापो यतो भवेत् ॥ ३

अर्थः- समर्पणथी पेहेलो हुं शु सदा उत्तम हतो तेथी म्हारी अधमतानो श्यो विचार करवो जेथी मने पश्चात्ताप थाय. टीका. हे मन समर्पणथी पहेलां हुं शुं सदा उत्तम हतो केम जे बध्धा एना दोषो समर्पणथी मट्या छे. सदा एम जे कह्युं छे तेणे

करीने हृदयमां हरिना आवेशथी कोई कोई वख्त उत्तमता थती हती पण ते उत्तमता निरंतर महारामां रहेती न हती. जेवा श्रावण शुक्ल एकादशीमां आगल उभा रहेला जे कृष्ण तेमने विशे साक्षात् समर्पण कर्याथी उत्तमता थई तेवी पेहेली न हती. त्यां शंका करे छे जे मुखारविंदरूप जे श्रीआचार्यजी तेमनुं एवुं केहेवुं योग्य नथी मुखारविंदने तो कृष्णरूपपणाथी सर्वदा उत्तमता छे तेथी श्रीआचार्यजीनुं एम केहेवु नथीज घटतु एवी शंका करे तो कहे छे जे एम नथी केम के श्रीआचार्यजीनुं स्वरूप पण रसात्मक छे तेथी ते रस एवो जछे. जेम भगवाननी लीलारसनो अनुभव थवासारु मानवाला श्री स्वामिनीजीयोमां तेवी दीनता तेवुंजरूप अने ते वुज वचन पण छे तेम अवतारमां भक्तिरूप रसने तेनो अनुभव जेथी थाय एवु रूप अने एवुंज वचन श्री आचार्यजीनुं आंही कह्युं छे तेथी रसात्मकरूपने विषे एवो संदेह न करवो. जेथी रसनुं स्वरूप ज्यांजेवुं होय ते

वुंज बध्धुं वचन विगेरे होय. वली मारी अधमता छे तेनो विचार हमणा तारे श्यो करवो छे जेथी अधमपणाथी हे चित्त तने पश्चात्ताप थाय छे त्यां अंतःकरण शंका करे छे के खरी वात तोएपण आ कृष्ण छे अने पोताना स्वरूपथीज सर्वथी उत्तम छे. करवाने नकरवाने अने बीजी रीते करवाने समर्थ छे तेथी कोई वखते अंगीकार जे छे तेनी बीजी रीत करी नाखे त्यारे पछी शी गति अने क्यां हुं जाऊं अने जइने कोनो हुं आश्रय करूं एवी जे चिंता थाय ते न करवी.

॥ मूलश्लोक ॥

सत्यसंकल्पतो विष्णुर्नान्यथा तु करिष्यति ॥ आज्ञैव कार्या स ततं स्वामिद्रोहो न्यथा भवेत् ॥ ४

अर्थः- विष्णु जे छे ते सत्यसंकल्प छे ते पोताना संकल्पथी बीजी रीते तो नही करे सदा एनी आज्ञा प्रमाणेज करवु नहि तो स्वामिनो द्रोह थाय. टीका करे छे जे हरि एटले दुःख हर्ता विष्णु छे ते स

त्यसंकल्प छे तेथी अने पोताना अंगीकार करेला उ
पर कृपाए करीने पूर्ण छे तेथी कोई वरवते अंगी-
कारने बीजी रीते नहि करे. केटला एकनी कृति स
त्य छे केटला एकनी वाणी सत्य छे पण विचारे-
लु सत्य नथी पण हरिनुं विचारेलु सत्य छे तेथी
ते केम बीजी रीतनुं थाय. कोई वरवते दासना दो
षे करीने हरिनु विचारेलु बीजी रीते थातु नथी ते
थी आ वचन सांभल्या पछी बीजी रीतनो भय
तारे राखवो नही. विष्णु एटले व्यापक भगवान
ते सर्वत्र रक्षकपणाए करीने छे ते बीजी रीते एट
ले अरक्षकपणुं केम करशे जेथी रक्षा करवु ए वि
ष्णुनुंज एकनु सामर्थ्यपणाथी काम छे नान्य-
थातु एटले बीजीरीते तो एमां जे तो कह्यो छे तेथी
भक्तने विषे कोई वरवते बीजी रीत नथी करता कर
वु अने न करवु एतो सुख अने विरहने वधारवा-
सारु छे. शंका करे छे के एम जो होय तो शुं दासो
ने स्वतंत्रपणु बाधक नथी जे स्वतंत्र थाय अने चिं
ताजे न करे ते तो आज्ञानो लोप करे एम ज्यारे थाए

त्यारे महोटो दोष थाए ते सारुज आहीं केहेवाय छे दासने आज्ञा प्रमाणेज करवुं पण प्रश्न न करवा अने विचारपण न करवो श्लोकमां आज्ञाज एम कह्युं छे तेथी धर्म जे करवा ते भगवाननी आज्ञा छे एम जाणीने करवा अने करवु एम कह्याथी आवश्यकपणुं बताव्युं छे तेथी सेवक जो तेम न करे तो दोषवाळो थाए. निरंतर आज्ञा प्रमाणे करवुं जे बताव्यु छे ते पोतानो स्वधर्म छे एम बतावासारु छे त्यारे आज्ञा प्रमाणे करवाथी जेवो स्वधर्म छे तेमज न कर्‍याथी दोष पण तेवो छे त्यारे वाणीरूपी वेदना धर्मोने न कर्‍याथी वाणीनो बतावेलो नरकादि दोष थाए छे अने भगवाननुं स्वरूप जे स्वामी अने पोतानुं स्वरूप जे दास तेनो धर्म जो न करे तो भगवानना स्वरूपथी पोतानुं दासपणुं विरुद्ध थाय त्यारे ए स्वामिनो मोहोटा द्रोहरूपी दोष थाय ॥ श्लोक ॥ **आज्ञा भंगो नरेंद्राणां विप्राणां मानखंडनं ॥ पृथक् शय्याच नारीणा मशस्त्र वध उच्यते** ॥ अर्थः- राजानी आज्ञानो भंग अने ब्राह्मणनुं-

मानभंग अने स्त्रीनी शय्या जुदी करवी ए वगरह थीयारे ए त्रणेनो वध छे एवुं लौकिक वचन छे तेथी ए महोटो दोष थाय. हरीनी सेवा करतो होय अने मार्गमां वरततो होय एवो जे सेवक तेनो आज्ञा प्रमाणे करवुं एज धर्म छे.

॥ मूल श्लोक ॥

सेवकस्यतु धर्मोयं स्वामी स्वस्य करिष्यति ॥ आज्ञा पूर्वंतु या जाता गंगा सागर संगमे ॥ ५ ॥

अर्थः- सेवकनो धर्म तो एज छे अने स्वामि पोताना नुं बध्धुं करशे. पेहेला तो आज्ञा गंगा सागर संगममां थई. टीका. सेवकनो धर्म तो एज छे अने स्वामि जे छे ते पोताने करवानुं करशे. सेवकस्यतु एमां जे तु एटले तो शब्द कह्यो छे एणे करीने पुष्टि मार्गवाळामां बीजी रीतनो धर्म देखाए छे. तेने भगवाननी आज्ञानो लोप अने भगवानथी मान विगेरे करवुं तेपण हरिना गुणना आवेशथी थाय छे तेम आह्निपण एटले आपणे विषे पण एमज जाणवुं

पण ए कांई धर्म नहिं तेथी अर्जुने श्री गीताजीमां कहुं छे "करिष्ये वचनं तव" एटले तमारा वचन प्रमाणे करीश एवो आज्ञा पालवारूपी धर्म छे ते संदेह वालुं फल सिद्ध नथी करतो. जेथी आज्ञा नामनो जे धर्म छे तेने हरि पोते करशे केम जे "अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुच" एटले हुं तने बध्धा पापथी छोडावीश तु शोच मकर. एरीते शरण आवेलानो जे आज्ञा पालवारूपी धर्म छे तेने भगवान पोतानो मानीने बीजा धर्मना न करवाना पापथी छोडाववु हरिये पोते कबुल कर्युं छे. बीजा पण जे धर्म छे ते भगवाने पोतानी विभूतीना रूप बाबतना कह्या छे. ए धर्मोमां सर्वत्र फलनुं दान जे छे ते भगवाननी विभूतिरूपी देवादिकथी थाय छे एवो निश्चय छे. एवो आज्ञा पालवारूपी जे भगवाननो धर्म छे तेनो त्याग मे कर्यो छे एम मनने आप श्रीआचार्यजी आज्ञा करे छे पश्चात्ताप पण तेथीज सर्व प्रकारथी योग्य छे एम वर्णन कर्युं छे. तेज हरिये मने प्रण आज्ञा करी एम श्री आचार्यजी आज्ञा क

रे छे. पेहेली आज्ञामां देहपरित्याग एटले देहनो प
रित्याग करवो एम कह्युं छे. ए आज्ञा गंगासागर
संगम उपर थई छे तेनुं कारणतो भावात्मक अग्नि
तेना सन्निधानथी साक्षात् तेना भावनो संबंधमा
र्गना उपदेश कर्याविना थाय ते विरहभावनो सं
बंध थाय तेथी पुष्टिमार्गना प्रभुना रूपनुं प्राक
ट्य थाय अने हरिनो भावजे छे ते गूढ एटले छानो
छे तेनुं ज्ञान बधीजगाये बध्धाजीवोने थाय ते
हरिनें गमतुं नथी तेथी प्रभुये देहत्यागनी आज्ञा
करी ते पछी प्राकृतनी पटे बध्धा कर्म करीने गृह
स्थाश्रममां बीजा जीवोने मोह पेदा करीने पोता
ना भक्तोने पोताना विरहात्मकरूपनुं सन्निधान क
राव्युं छे अने श्रीआचार्यजीए पुष्टिमार्गना उपदेश
नो आरंभ कर्यो.

॥ मूलश्लोक ॥

यापि पश्चान्मधुवने नकृतं तद्दूयं
मया ॥ देहदेश परित्याग स्तृती
यो लोकगोचरः ॥ ६ ॥

अर्थः- पछी वळी जे मधुवनमां थई ते देह अने
देशना परित्यागनी बे आज्ञा मे मानी नहीं. टीका:
अने जे फरी पछीथी मधुवनमां आज्ञा थई ए बे आ
ज्ञा मे मानी नहीं ते बे आज्ञा शी बाबतनी हती. पे
हेलीमां देह परित्याग करवानी अने बीजीमां देश प
रित्याग करवानी अने त्रीजी लोकना त्यागनी हती
ते पछी मधुवनमां गूढ एटले छानी लीला भक्तोने
उपदेशना मीशे करीने खुल्ली करी ते प्रभुने अति
नगमतुं थयु केम जे भगवान लीलामां विराजे छे
तेथी लीलाने खोलवा द्वारा भगवानज खुल्ली ग-
या ए आज्ञा जे बे नमानी ते लीलाना वर्णन करवा
मां रसविशेष आव्यो तेथी अने श्रीभागवतनो
गूढ अर्थ प्रकट करवा सारु तेमज लीलाना बध्धा
स्थल छे तेमां पोतानी दृष्टि आसक्त थई गई अने
तेमां प्रीतीनुं जे प्रौढपणु एटले महोटाई तेथी करी
ने आज्ञा न पालवामां बीक न लागी. मूळ श्लोक
मां तु शब्द मुक्यो छे एणे करीने एवुं जणाव्युं छे
जे हमणा एवी आज्ञा नथीज करता आज्ञाथी क

रीने भगवान मलवानुं मन करे छे एवु जाण्याथी मनमांस्वास्थपणुं आवे एटले विरह सारु जे संन्यास कर्यो छे तेमां विरहभाव जतो रहे ते सारु ज "स्वास्थ वाक्यं न कर्त्तव्यं" स्वास्थ वाक्ये करीने संन्यासमां विरहभाव मटी जाय छे. तेथी अमारा प्रभु जे श्रीमहाप्रभुजी तेमनुं संन्यासनिर्णय ग्रंथमां "स्वास्थ वाक्यं न कर्तव्यं" एवुं वचन छे ते एज कारणथी छे. पेहेली आज्ञानुं स्थल जे गंगासागर संगम छे ते पोताना मनमांथी योग एटले मलवुं बतावे छे. गंगानो जेम सागरनी साथे आहीं योग छे तेम म्हारी साथे एकपणाथी संबंध ए रीते स्वामीए लोभ बताव्यो छे ते पछीना बीजा श्लोकमां "यापि" एमां अपि एटले पण एम कहेल छे तेणे जणाव्युं जे ए बीजी आज्ञा पण पोताना संबंधनोज लोभ बतावे छे अने पश्चात् एटले पछी ए पदे करीने ए बीजी आज्ञा घणा वखत पछी थई छे

अने तेनुं ठेकाणुं मधुवन कह्युं छे एटले मधुदैत्य जे दुष्ट छे तेनो संबंध त्यां छे. तेथी हरिये पेहेलानी आज्ञामां जेवी एकता करवी बतावी हती तेवी एकता करवाना नथी एम बताव्युं छे. त्यांहांना विप्रोनी एज कारणथीज दुष्टता श्रीमद्भागवतमां कही छे. ए बे आज्ञामां कहेलो परित्याग ते नकर्यो अने त्रीजो लोकपरित्याग कर्यो एम अर्थथीज जणाय छे. ते परित्याग लोक बाबतनोज छे नाम दानादिक आपवुं आपे छोडी दीधुं अने तनुजा वित्तजा श्रीठाकुरजीनी सेवा आप करे छे एवा दर्शन वैष्णवोने थाय ए पण छोडी दीधुं अने दुःख आपनारो जे संन्यास तेनुं आप सहन करे छे तेथी लोकनो त्याग कर्यो छे. शंका करे छे एम ज्यारे थयु त्यारे पश्चात्ताप तो थायज एम जो कहो तो तेम नथी.

॥ मूलश्लोक ॥

पश्चात्तापः कथं तत्र सेवकोहं नचान्यथा ॥ लौकिक प्रभुवत्क्

ण्णो नद्दष्टव्यः कदाचन ॥ ७ ॥

अर्थः- हुं सेवक छऊं कांई बीजी रीतनो नथी तेथी त्यां पश्चात्ताप शुं करवा जोईये लौकिक प्रभु जे राजा तेनी पेठे कृष्ण कोई वरवते जोवा लायक नथी. टीका करे छे. सेवा करु छौं तेथी सेवकज छौ अने सेवा तो स्वामिना कह्या प्रमाणें करवाथीज - थाय छे. स्वामिए जे श्री भागवतनुं वर्णन करवुं कह्यु अने पुष्टिमार्गने प्रकट करवानुं कह्युं छे ते ज हुं करु छौ ए कर्या पछी जो हुं रहीश तो दोष प्राप्त थशे. वली आज्ञाथी प्राप्त थयेली जे सेवा ते कर्याथी धर्ममांथी रवशी जवातु नथी सेवा कर्याथी अने आज्ञाप्रमाणे रह्याथी बीजुं बध्धुं छोडी दीधुं छे तेथी हे अंतःकरण तुं केहे श्या प्रकारथी मने पश्चात्ताप थाय त्यां शंका करे छेजे लोकमां राजा होय छे तेनी सेवा करता पण तेनी पछीनी आज्ञा न मान्याथी राजा पोताना काममांथी काढी मुके छे एवुं जोएलुं छे. आंही पण जो भगवान एम करे तो तेनी बीकथी तो सर्वेप्र

कारे पश्चात्ताप तो थाय. एम जो जाणे तो आप स-
माधान करे छे के कृष्ण एटले सदानंद अने हरि
एटले दुःखहर्ता ते लौकिक राजा विगेरेनी पेठे जा
णवा नही जे लौकिक राजा छे ते मनना भावने
जाणतो नथीहरितोभावने जाणे छे अने ए थोडा दा
हाडा रेहेनारो अने राखनारो छे हरि तेवा नथी.
ए तो दोषथी भरेलो छे अने हरि दोष विना-
ना छे एनो अंगीकार अनित्य छे अने कृष्णनो
अगीकार नित्य मानेलो छे ते दुःखरूप छे अने कृ-
ष्ण तो पूर्णानंद वर्णन करेला छे ते थोडु आपनारो
छे अने हरि छे ते पूर्ण परमानंदना समूहने आप
नारा छे कोई वखते नजाणवा एम कह्युं एणे करी
ने ते अस्थिर छे अने हरि स्थिर छे तेथी भगवान
त्याग करे एवी बीकने मटाड्याथी पश्चात्तापने दू
र कर्यो. वली बध्धुं लोक संबंधी अने वेद संबंधी अ
ने अहंता अने ममता तें बध्धुं कृष्णमां समर्प्युं छे
तेथी हवे कांई तने करवुं रह्युं नथी तेथी तने कृता-
र्थपणु थयु छे शुं करवा तूं दुःख करे छे . तने हवे शुं

सातमा श्लोकमां लौकिक प्रभु जे राजा तेनी पेठे कृष्णने नजाणवा एम
कहेला कोई वखत नजाणवा ए पदे करीने एम समजवुं.

छे तेथी सुखी था वेहेमथी तने दुःख थयुं छे ते त्त
रत तूं छोड एवो म्हारो अभिप्राय छे सेवा जेमने
प्रिय छे अने करुणाने करनारा छे अने मृदु जेमनुं
चित्त छे तेमने सेवा करता हये अने तेमनी पासेज
ई न शकिये तोए अलौकिक प्रभुने असंतोष थतो
नथी अने देहना अध्यासथी जो प्रभुपासे नजाये
तो तो प्रभुने असंतोष थाये तेथी दृष्टांते करीने चि
त्तने समाधान करे छे देहने विषे सत्ता राखवी नहीं

॥ मूलश्लोक ॥

सर्वं समर्पितं भक्त्या कृतार्थो
सि सुखीभव ॥ प्रोढापि दुहिता
यद्वत्स्नेहान्न प्रेष्यते वरे ॥ ८ ॥

अर्थः- भक्तिथी बध्धुं तें समरप्युं छे तेथी तूं कृता
र्थ छो अने सुखी था. मोहोटी दीकरीने पण जेम स्ने
हथी वरपासे नमोकले. टीका करे छे जेम पोता-
नी दीकरीनुं जमाईसारुज पोषण छे तेमज आंही प
ण हरिसारु जाणवुं. ज्यांसुधी तेनी योग्यता नथई
होय ताहांसुधी रक्षणादिकने विषे चिंता करवी अने

प्रौढपणु ज्यारे थाय त्यारे तो सर्वे चिंता तेनेज छे-
एम जाणवुं तेथी देहाध्यासे करीने एटले देहनी आ
सक्तिये करीने देहादिकनुं हरिपासे न मोकलवु.ते
न.करवु ए वात उचितज छे केम जे एमां स्नेह छे ते
थी वर जे छे ते मोकल्याविना संतोष पामतो नथी.

॥ मूलश्लोक ॥

तथा देहे न कर्त्तव्यं वरस्तुष्यति
नान्यथा ॥ लोकवच्चे त्स्थिति र्मे
स्या त्किंस्यादिति विचारय ॥ ९

अर्थः- तेम देहमां न करवुं वर बीजी रीते प्रसन्न न
थाए हवे लोकनी पेठे महारी स्थिति थाय तो शुं था
य ते तुं विचार. टीका. रसनने अयोग्य वस्तु छे ते
थी नवा रसनने भोगवनारो भोगवतो नथी तेथी
एने इच्छा छे अने आपणे आपीये नहि त्यारे ए
केम प्रसन्न थाय अने तेनी इच्छा मात्र जाण्याथी
ज जो आपीये तो विशेष संतोष थाय अने आज्ञा
थयाथी जो आपीये तो मध्यम संतोष थाय अ
ने आज्ञा थया पछी पण देहादिकनो लोभ करी-

ये तो प्रसन्न केम थाय जेनासारु.सर्व देहादिक-
नी गरज पडे छे ते संतोष जो न थाय तो बध्धुं वृ
था. त्यांहां शंका करे छे जे लोकमां उत्पन्न थयो
तेने देहादिकनो लोभ तो थाएज अने पोताने न
गमतु ज्याहारे केहे त्यारे प्रीयसाथे मानपण था
ए अने प्रीयना सौभाग्यथी पोताना जेवुं कांई
नहि एम जणावनार मद पण थाए. अने फरी पो
तानी महोटाईथी प्रभुमां दोष पण देखाय तेथी
तेमां शुं आश्चर्य छे एवी शंका जो अंतःकरण
करे तो त्यांहां आज्ञा करे छे के माहारे विषे चित्त
ने आवुं उचित नथी हुं एमना मुखारविंद रूप छौं
अने भक्तिरूप छउं अने अग्निरूपनुं धारण कर
नारो छउं अने निर्दोष केवल आनंदरूप एवा श्री
हस्त चरणादिक तेथी सहित छउं अने कृष्णना
अधरसुधानो सार अने परमानंद रूपवालो छउं
अने बध्धाने पोताना सन्निधान मात्रथीज भ-
क्ति आपनारो छउं अने श्रीकृष्णना रसना भाव
रूप छउं अने व्रज स्त्रीना हृदयमां रह्यों छउं अने

अनेक लीलामां आक्रांत माहारां सर्वे अंग छे तेथी बध्धा जगतने हुं भुली गयो छऊं अने हृदयना स्वामीसहित छों अने एमनी आज्ञाथी प्रकट थयो छो एवो जे हुं तेनीपण हे मन लोकनी पेठे स्थिति थाय त्यारे तुं केहे शुं थाय एफरी तुं हृदयमांज विचार ज्यारे एमनुं मुखारविंद एम रेहे त्यारे प्रभुज एम रेहे एम आव्युं ते आनंदरूपी हरिने युक्त नथी पण आ वात महाराथी केहेवाय एवी नथी तेथी श्री आचार्यजीए इति विचारय एटले तुंज विचार एम कह्युं. शंका करे छे जे अपराध तो थयो त्यारे जो उपाय कई नथी तेथी शुं करवुं वगरजाणे अथवा जाणिने जे कर्युं ते कांई न कर्युं एम नथी तेथी केम ए पश्चात्तापहृदयथी दुर थाय एमजो केहे तो तेम नथी.

॥ मूलश्लोक ॥

अशक्ये हरिरेवास्ति मोहं मागाः कथंचन ॥ इति श्रीकृष्णदासस्य वल्लभस्य हितं वचः ॥ १० ॥

अर्थः- ज्याहां उपाय नथी त्याहां तो हरि दुःख ह

रनारा छे तेथी कोई रीते तुं मोहने पाममां एरीत
नुं कृष्णना दास जे श्रीवल्लभ तेमनुं हितकारी वच
न छे. टीका करे छे. ज्याहां पोताना भक्तोथी न
बने त्याहां पोते सर्वेना दुःखहर्ता छे ते उपेक्षा कर
ता नथी बध्धुं सिद्ध करे छे. जेथी गजेंद्रनो ज्याहां उपा
य न हतो त्याहां पोतेज प्रकट थया अने कार्य सर्वे क-
र्यां. भारतादिकमां हरि एवुं नाम कह्युं छे एणे करीने सा
धन ज्यारे कांई न होय अने फरी दीन भाव उत्पन्न
थाय त्यारे निःसाधनना फलरूप हरि प्रकट थाय
ए निश्चय छे. "अशक्ये हरिरेव" एमां एवकारे क
रीने बीजाने निःसाधन फलरूपता नथी अने पू
र्णानंदनो बीजाओमां अभाव छे तेथी अने रस
तेमनामां नथी तेथी कृपालुता नथी "अशक्ये
हरिरेवास्ति" एमां अस्ति एटले छे ए पदथी पो-
तानी आगल हरिनो प्रादुर्भाव थयो छे एम बताव्युं
छे तेथी करीने मोह अने विकल्पताने हे महारामन तु प्रा
प्त थामां एम पोताना अंतःकरणनुं पोताना सारा
वचनोए करीने समाधान करीने पोताने निश्चिंत-

पणु उत्पन्न करीने पोताना सेवकोने आज्ञा करे छे.

॥ मूलश्लोक ॥

चित्तं प्रति यदा कर्ण्य भक्तो
निश्चिंत तां व्रजेत् ॥ ११ ॥

अर्थः- ए रीतनुं श्रीकृष्णना दास एवा जे श्रीवल्लभ तेमनुं हितकारी वचन तेने श्रवण करीने भक्त निश्चिंतताने पामे. टीका कहे छे जे पोताना चित्तनें कह्युं एवा प्रकारनुं वाक्य फलदशामां हितकारी छे एम एनुं श्रवण करीने हरिने भजे तो पोताना जीवना दोषमां पण भगवान छोडता नथी एवा ज्ञानथी भगवाननो छोडी देवारूपी - भय मट्याथी जन जे छे ते निश्चिंतताने पामे. शंका करे छे के एटला वचन मात्रथीज निश्चिंतपणु केम थाय पोताना अनुभवविना वचनमात्रथीज कांई सिद्ध थतुं नथी एमजो केहे तो पोताना सेवकोनु समाधान करवासारु पोतानुं दासपणु आप आज्ञा करे छे ते शुं करवाने के जे स्वरूप पोताना आगल प्रकट थयु छे तेनो कहेलो अनुभा-

वजणाववासारु एटले आंहिमें आ बध्धानो अनु
भव करीने आ वर्णन कर्युं छे तेथी सत्फलनी आ
शावाला जे तमे तेमणे आ वातमां अविश्वास न
करवो एम आपें सेवकोने जणाव्युं छे. त्यांहां शं
का करे छजे कृष्णाना दासपणु अने कृष्णापणु ए बे
विरुद्ध छे ते श्रीआचार्यजीमां बे केम घटे के शुं क
पटे करीने पोताने दासपणु कहे छे के महोटा पु
रुषोने जेम भगवान केहे तेम महापुरुषनी पेठे
श्रीआचार्यजीमां महोटाईथी कृष्णपणु केहेवा
य छे के भावे करीने पोतानुं स्वरूप भुली गया छे
तेथी पोताने दासपणु कहे छे के ब्रह्म छे ते विरुद्ध
धर्माश्रय छे तेम पोतामां विरुद्ध धर्माश्रयपणुं
बतावववासारु दासपणु अने कृष्णापणु कहे छे के
जीवने मोह करवासारु एम करे छे एवा ज्यारे सं
शय पेदा थाय त्यारे सत्पुरुषोनी आगल केहेवाय
छे एरीते समाधान करवुं. जेम रसात्मक हरिनुं रू
प जे ठेकाणे जेवुं छे ते प्रमाणेज वचन अने क्रिया
तेपण तेवीज छे अने तेवुंज पोतानुं रूप केहेवाय छे.

कांई बीजाने देखाडवासारु एम करता नथी. जो-देखाडवासारु एम करता होय तो रसरूपपणुं न ठरे अने रसने जाणता होय ते बीजाने जेम बोध करावे एम बोधकपणुं थाय. लोकमां पण नाटक विगेरेमां स्त्रियादिकना वेश करे छे त्यारे स्त्रीनि-रीते बोले छे अने तेमज चाले छे त्यारे रस उत्पन्न थाय छे. ए रीते रसात्मक एटले रसरूप भगवान जे कृष्ण छे ते जेवो ज्यांहां रस छे त्यांहां तेवा छे अने ते रसना अनुभवसारु बचन अने कृतीपण तेवीज छे. भगवानने रसरूपपणाथी तेमनुं मुखारविंदप णु फरी तेवुंज छे ते मुखारविंद दासपणाना रससा रू दासरूपे करीने प्रकट थयेलुं छे. ए भक्तिरूपी मुख छे तेथी रूपपण भक्तजेवुं छे अने वचन पण त्यां तेवुंज छे ते सत्यज छे बीजी रीतनुं नहीं. जेम अमारा प्रभु जे रसात्मक हरि तेमनुं वचनमान म टाडवाना समयमां पोतानी दीनताने बतावनारू छे तेम आचार्योने विषे दासपणु विगेरे बतावना-रां बचनो छे तेथी आंई कांई पण संदेह नथी. वल्लभ

स्य एटले वाहालो ए नाम कह्याथी हरिनुं विश्वासनुं ए स्थान छे एम कह्युं. हरिनी पोताने विषे तेम नामने विषे नित्य प्रीति कही छे एवा स्वरूपनो ज्यारे विश्वास थाय त्यारे निश्चिंतपणानो निश्चय मानेलो छे. भाग्यवालाओने श्रीवल्लभ प्रभुमां विश्वास थाय छे. जेम निवेदन विषे जे चिंता तेनुं नवरत्न ग्रंथमां निवारण कर्युं एम आ अंतःकरणप्रबोधग्रंथमां पोताना मार्गानुवर्तिओनी फल बाबतनी चिंतानुं निवारण कर्युं. संयोग मान अने विरह एवा नामना जे त्रण भाव तेनो अनुभव श्रीआचार्यजीए कर्यो अने संयोगनो अनुभव तो प्रभुनी सेवाथी कर्यो. संन्यास कर्याथी विप्रयोगनो अनुभव कर्यो अने आज्ञा न मानवाथी मानभावने सफल कर्यो अने पछी पोताना स्वरूपनी स्फूर्तिथी पश्चात्तापने दूर कर्यो. त्यां श्रीहरिरायजी आज्ञा करे छे जे ए रीते श्रीवल्लभाचार्यना पदांबुरुह एटले चरणकमलनी रेणुमां आसक्त जेनुं चित्त छे एवो जे हरिदास तेनी करेली टीका पूर्णताने पामी

तेथी मने पोताने दृढ करो. कई दोषवालुं के वगर दोषवालुं जे में आ टीकामां कह्युं छे ते प्रभु म- विचारो. सत्पुरुषो पण पोतानी कृपायें करीने मा हारुं मूरखनुं अयोग्य जे बकेलुं होय तेने आमां श्रीआचार्यजीनो संबंध छे तेथी परम आदरथी जूओ. श्रीहरिरायजीकृत अंतःकरणप्रबोध- नी टीका संपूर्ण.

शुद्धिपत्रम्

पानुं	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१	कहेछे	केहेछे.
३	४	,,	,,
४	७	करावववावालु	करावववावालुं
५	१६	एवा	ए
६	४	बतावेलु	बतावेलुं

पानुं	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	७	बतावेलु	बतावेलुं.
८	४	उत्कष्टता	उत्कृष्टता
१०	१८	कई	कंई
१२	१४	तेवुज	तेवुंज
१५	६	बताव्यु	बताव्युं
१५	७	करवु	करवुं
१५	८	बताव्यु	बताव्युं
१६	५	करवु	करवुं
१६	९	करवानुं	करवानु
१७	५	पोते	पोतानो
१७	१०	छोडाववु	छोडाववुं
२०	१	एवु	एवुं
२३	४	नही	नहीं
२३	९	अगीकार	अंगीकार
२७	११	कई	कंई
२७	१२	कर्‍यु	कर्‍युं
२८	१६	विकल्पता	विकलता.
२८	१६	तु	तुं